सम्पादकीय

नगर निगम दिवालिया लेकिन फिर भी वसूली में लापरवाह

जयपुर शहर की सरकार नगर निगम हेरिटेज और ग्रेटर है। पिछली सरकार ने जयपुर नगर निगम को दो टुकड़ों में बांट दिया था। हम बात करेंगे संयुक्त जयपुर नगर निगम की क्योंकि नगर निगम के पास हमेशा से फंड का टोटा रहा है। वह तो तत्कालीन मुख्यमंत्री भैरोंसिंह शेखावत का भला हो कि उन्होंने जयपुर में जब चुंगी समाप्त की तो ये प्रावधान किया था कि चुंगी पुनर्भरण के रूप में नगर निगम को एक मुश्त रकम दी जाएगी। इसी फंड की वजह से नगर निगम का काम चल जाता है अन्यथा नगर निगम के कर्मचारियों को वेतन के भी लाले पड़ सकते हैं। इतना कुछ होने के बाद भी जयपुर नगर निगम वसूली के मामले में शून्य है। एक रिपोर्ट के अनुसार जयपुर शहर में बड़े लोगों पर नगर निगम का अरबों रुपया राजस्व के रूप में बकाया चल रहा है। हालांकि जयपुर में नगर निगम ग्रेटर ने राजस्व की उगाही के लिए कुर्की की धमकियां देना शुरू किया है लेकिन ये तो हमेशा से ही होता रहा है। इस बार क्या होगा ये देखने लायक है। पिछले एक महीने की रिपोर्ट देखें तो ग्रेटर निगम ने शहर में 308 से ज्यादा संस्थाओं पर रिकवरी के लिए कुर्की की कार्रवाई की है। ये सब छोटी मोटी मछलियां है। सेंट्रल पार्क स्थित पोलो क्लब, जेएलएन मार्ग वर्ल्ड ट्रेड पार्क, टोंक रोड स्थित राजस्थान क्रिकेट एसोसिएशन (आरसीए) समेत कई सरकारी और प्राइवेट एजेंसियां हैं। इनसे 10 लाख से लेकर 10.39 करोड़ रुपए तक का यूडी टैक्स वसूलना है। इस बार एक अप्रैल 2023 से 21 मार्च 2024 तक निगम ग्रेटर ने 65.28 करोड़ रुपए का यूडी टैक्स वसूल कर लिया है। अभी 10 दिन का समय और है। हालांकि बड़ी संस्थाएं जिन पर एक करोड़ रुपए या उससे ऊपर बकाया चल रहा है। उन पर निगम ने अब तक कोई कार्रवाई नहीं की है। इन सभी संस्थाओं को नोटिस जारी करने की औपचारिकता को पूरी कर ली गई है। कुछ संस्थाओं ने अब तक जवाब नहीं दिया। नगर निगम को चाहिए कि वह बड़े बकायादारों के खिलाफ ठोस कार्रवाई अमल लाए। जब बड़ों के खिलाफ कार्रवाई होगी तो छोटे तो अपने आप ही लाइन पर आ जाएंगे। नगर निगम को बड़ी संस्थाओं और बकायादारों के खिलाफ सम्पत्ति जब्त करने की कार्रवाई अमल में लानी चाहिए। ताकि नगर निगम कड़की के दौरे से बाहर निकल सके।

खुशहाल समाजों की रैंकिंग से भारत भ्रमित न हो

पाकिस्तान पिछली बार 108वें स्थान पर था, इस बार 122वें पर आ गया है, पर तब भी भारत से चार पायदान ऊपर है। जिस देश में खूब महंगाई है, जहां की जनता त्राहिमाम-त्राहिमाम कर रही है, जहां धार्मिक उन्माद व्यापक है, जो आतंकवाद को प्रोत्साहन देता है, वह देश भी अगर हमसे खुशहाल है, तो ऐसी खुशहाली मापने के तरीकों पर विचार होना चाहिए। ऐसा प्रतीत होता है कि खुशहाली को तय करने के पैमानों में अवश्य ही कोई पूर्वाग्रह या आग्रह है। क्योंकि ऋण की गुहार लगाता एवं त्राहिमाम करता पाकिस्तान को 122वें स्थान की रैंकिंग देना विडंबनापूर्ण एवं विसंगतिमय हैं, जो इस सूचकांक के महत्व को घटा देती हैं। जो दुनिया के खुश देशों के आकलन में त्रुटि की पूरी संभावनाएं होने को दर्शाता है। अनेक सवाल खड़े करती है यह खुशहाल देशों की रैंकिंग। यह विडंबना ही है कि धार्मिक पाबंदियों वाला कुवैत दुनिया का 13वां सबसे खुशहाल देश है। ऐसी अतार्किक सूची देखकर अफसोस एवं आश्चर्य भी होता है और चिंता भी होती है। क्या खुशहाली को धार्मिक और सामाजिक स्वतंत्रता के आधार पर ज्यादा नहीं देखा जाना चाहिए? खुशहाली को केवल आर्थिक समृद्धि और संसाधनों की अधिकता में घटाकर देखना सही नहीं है। खुशहाली की रैंकिंग को देखकर भारत को कतई भ्रमित नहीं होना चाहिए।

ललित गर्ग।

143 देशों के विश्व खुशहाली रैकिंग में भारत 126वें स्थान पर रहा है जिसमें फिनलैंड ने लगातार छठीं बार सर्वोच्च स्थान पाया है। यह बात भी गौर करने की है कि भारत में दस अंकों का सुधार हुआ है, फिर भी भारत के लिये आश्चर्यकारी एवं विचारणीय है। फिनलैंड को दुनिया का सबसे खुशहाल देश करार दिया गया है, पर गौर कीजिए, वहां आबादी सिर्फ 56 लाख है। मतलब, इस देश की चुनौतियां बहुत कम हैं। धार्मिक वातावरण ऐसा है कि विद्वेष की ज्यादा गुंजाइश नहीं है। छोटा राष्ट्र होने की वजह से सरकारों के सामने समस्याएं कम है। अत: फिनलैंड की स्थिति अच्छी है, पर उसकी तुलना भारत जैसे 140 करोड़ आबादी वाले देश से कैसे हो सकती है? यह बहस का विषय है। संयुक्त राष्ट्र द्वारा प्रायोजित इस वार्षिक रिपोर्ट में नॉर्डिक देशों ने 10 सबसे खुशहाल देशों में अपना स्थान बनाए रखा है। फिनलैंड के बाद डेनमार्क, आइसलैंड, स्वीडन ने शीर्ष स्थान हासिल किए हैं। इन सभी देशों में समाज समस्यामुक्त एवं काफी सुलझा हुआ है और विविधता वहां ज्यादा समस्याएं पैदा नहीं करती है। देखने की बात है कि खुशहाली की रिपोर्ट विगत एक दशक से भी ज्यादा समय से जारी हो रही है और पहली बार अमेरिका और जर्मनी जैसे विकसित देशों को शीर्ष 20 देशों में स्थान नहीं मिला है।

निर्मम युद्ध लड़ रहा इजरायल पांचवां सबसे खुशहाल देश है! पीड़ित फलस्तीन 103वें स्थान पर है, तो रूस 72वें स्थान पर और यूक्रेन 105वें स्थान पर। ये देश युद्ध के बावजूद भारत से ज्यादा खुशहाल हैं। पता नहीं, इस रैंकिंग पर कितना भरोसा किया जाए? जहां तक भारत का सवाल है, खुशहाली के सभी पैमानों पर हमें अपने प्रयास बढ़ाने की जरूरत है। एक बड़ा सवाल यह भी है कि हम प्रसन्न समाजों की सूची में क्यों नहीं अव्वल आ पा रहे हैं? यह सवाल सत्ता के शीर्ष नेतृत्व को आत्ममंथन करने का अवसर दे रहा है, वहीं नीति-निर्माताओं को भी सोचना होगा कि कहां समाज निर्माण में त्रुटि हो रही है कि हम लगातार खुशहाल देशों की सूची में सम्मानजनक स्थान नहीं बना पा रहे हैं। भारत सरकार इस रिपोर्ट को कितनी गंभीरता से लेती है, यह देखने वाली बात है। भारत में खुशहाली को बढ़ावा देने में यहां की जनसंख्या सबसे बड़ी बाधा है। भारत के अल्पसंख्यक समुदायों की कट्टरता एवं संकीर्णता भी खुशहाल समाज निर्माण की बड़ी बाधा है। भारत जैसे विशाल और असमान विकास वाले देश के लिए 126वां स्थान कितना मायने रखता है? भारत में कई तरह का भारत है, एक अमीर व खुशहाल भारत है, तो उसमें एक गरीब भारत भी है। गरीब भारत भी विकास कर रहा है, लेकिन आबादी इतनी ज्यादा है कि अभी देश को समग्रता में खुशहाल देशों में अव्वल स्थान बनाने में वक्त लगेगा। सबसे खुशहाल देश फिनलैंड की आबादी महज 56 लाख है, उसके लिए विकास आसान है। भारत के मुम्बई, दिल्ली, कोलकता शहर में इसमें कहीं ज्यादा लोग रहते हैं। वैसे भी खुशी महसूस करना व्यक्ति के खुद की सोच पर निर्भर करता है। इसलिये प्रश्न है कि हमारी खुशी का पैमाना क्या हो? अधिकतर लोग छोटी-छोटी जरूरतें पूरी होने को ही खुशी मान लेते हैं। इससे उन्हें उस पल तो संतुष्टि मिल जाती है, उनका मन खिल जाता है। लेकिन यह खुशी ज्यादा देर नहीं टिकती, स्थायी नहीं होती। इच्छा पूरी होने के साथ ही उनकी खुशी भी कमजोर होने लगती है। खुशी एवं प्रसन्नता हम सबकी जरूरत है, लेकिन प्रश्न है कि क्या हमारी यह जरूरत पूरी हो पा रही है, ताजा आकलन से तो यही सिद्ध हो रहा है कि हम खुशी एवं प्रसन्नता के मामले में लगातार पिछड़ रहे हैं। विडम्बनापूर्ण स्थिति तो यह है कि हमारा भारतीय समाज एवं यहां के लोग अपने ज्यादातर पड़ोसी समाजों से कम खुश है। खुशहाली की रिसर्च में खुशहाली को राष्ट्रीय स्तर पर उपलब्ध भौतिक सुविधाओं से मापा जाता है। लेकिन खुशियां का दायरा इतना छोटा तो नहीं होता। विकास की सार्थकता इस बात में है कि देश का आम नागरिक खुद को संतुष्ट और आशावान महसूस करे। स्वयं आर्थिक दृष्टि से सुदृढ़ बने, कम-से-कम कानूनी एवं प्रशासनिक औपचारिकताओं का सामना करना पड़े, तभी वह खुशहाल हो सकेगा। डिजिलीकरण, आर्थिक नवाचार जैसी घटनाओं ने आम आदमी को अधिक परेशानी एवं समस्याएं दी है। समस्याओं के घनघोर अंधेरों के बीच उनका चेहरा बुझा-बुझा है। न कुछ उनमें जोश है न होश। अपने ही विचारों में खोए-खोए, निष्क्रिय और खाली-खाली से, निराश और नकारात्मक तथा ऊर्जा विहीन। हाँ सचमुच ऐसे लोग पूरी नींद लेने के बावजूद सुबह उठने पर खुद को थका महसूस करते हैं, कार्य के प्रति उनमें उत्साह नहीं होता। ऊर्जा का स्तर उनमें गिरावट पर होता है। क्यों होता है ऐसा? कभी महसूस किया आपने? यह स्थितियां एक असंतुलित एवं अराजक समाज व्यवस्था की निष्पत्ति है। ऐसे माहौल में व्यक्ति एवं समाज खुशहाल नहीं हो सकता। खुशहाली सूचकांक के लिए अर्थशास्त्रियों एवं विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों की एक टीम व्यापक स्तर पर शोध करती है, यह टीम समाज में सुशासन, प्रति व्यक्ति आय, स्वास्थ्य, जीवित रहने की उम्र, भरोसा, सामाजिक सहयोग, परोपकार, दान भावना, स्वतंत्रता और उदारता आदि को आधार बनाती है। रिपोर्ट का मकसद विभिन्न देशों के शासकों को आईना दिखाना है कि उनकी नीतियां लोगों की जिंदगी खुशहाल बनाने में कोई भूमिका निभा रही हैं या नहीं? हमारा शीर्ष नेतृत्व आजादी के बाद से ही निरन्तर आदर्शवाद और अच्छाई का झूठ रचते हुए सच्चे आदर्शवाद के प्रकट होने की असंभव कामना करता रहा है, इसी से जीवन की समस्याएं सघन होती गयी है, नकारात्मकता के इस व्यूह को तोड़ते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने खुशी एवं प्रसन्न जीवन के लक्ष्य को आकार दिया है, उन्होंने गहन अंधेरों से देश की जनता को बाहर निकालते हुए विगत एक दशक में अपने कामकाज एवं नीतियों से एक आशावाद उकेरा है। भारत में युवा सबसे अधिक खुश हैं, जबकि निम्न मध्यमवर्गीय लोग सबसे कम खुश हैं। भारत में अधिक उम्र उच्च जीवन संतुष्टि से जुड़ी है और यह उन दावों के विपरीत है कि उम्र और जीवन संतुष्टि के बीच सकारात्मक संबंध केवल उच्च आय वाले देशों में मौजूद है। भारतीयों के बीच संतोष के भाव, प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद, सामाजिक सहयोग, जीवन प्रत्याशा, स्वतंत्रता, उदारता के भाव में विस्तार जारी रहना चाहिए। भारत का वर्तमान खुशहाली वाला समाज बनने को तत्पर है, भले ही दुनिया की कुछ खुशहाली रैकिंग तय करने वाली एजेंसियां इससे असहमत हो।

आज का राशिफल

हमारे अनुभवी ज्योतिषियों की टीम के अनुसार आप कई विविध लक्ष्यों को पूरा करेंगे। क्या आप यह जानना चाहते है कि आपके जीवन के ऐसे कौनसे क्षेत्र है, जहां आपके सितारे बुलंद रहेंगे और दूसरी तरफ, अपको किस बातों से सावधान रहना चाहिए। हम न सिर्फ हमारे काम में और जटिल मुद्दों को सुलझाते ववत सकारात्मक ऊर्जा को महसूस करेंगे, बल्कि पारस्परिक संबंधों में भी, जहां यह स्थानान्तरण हमें संताप और बातचीत में लाभ प्रदान करेगा

मेष
नौकरी में पदोन्नति होगी। गृहस्थ जीवन में भी आनंद का वातावरण छाया रहेगा। व्यापार के उद्देश्य से कहीं बाहर भी जाना हो सकता है। आज स्वास्थ्य कुछ नरम-गरम रहने की संभावना है। शारीरिक रूप से आलस्य की भावना रहेगी।

वृष
काम की भागदौड़ के कारण परिजनों के प्रति ध्यान नहीं दे पाएंगे। हानिकर विचार, वर्तन और आयोजन से दूर रहें। पेट से संबंधित परेशानी हो सकती है। कहीं जाने का कार्यक्रम आज हो सकें, तो टाल दें। सरकारी कार्यों में सफलता प्राप्त होगी।

मिथुन
क्रोध की मात्रा अपेक्षाकृत अधिक रहेगी। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। आज आपके अहम को कोई चोट न पहुंचे और आपका किसी से झगड़ा न हो, इसका ध्यान रखें। शारीरिक रूप से शिथिलता और मानसिक रूप से चिंता बनी रहेगी।

कर्क
आज आप दृढ़ मनोबल और आत्मविश्वास के साथ काम कर सकेंगे। सरकारी क्षेत्र में लाभ होगा तथा आर्थिक व्यवहार करने में सफलता प्राप्त होगी। आज नौकरीपेशा लोगों को सहकर्मियों का अच्छा सहयोग मिलेगा। भागीदारों से लाभ होगा।

सिंह
आज आपको अपने उग्र स्वभाव पर संयम रखने की जरूरत है। शारीरिक और मानसिक रूप से शिथिलता का अनुभव होगा। अधिक परिश्रम के बावजूद अपेक्षित सफलता नहीं मिलेगी। संतान के विषय में आपको चिंता हो सकती है।

कन्या
विवाहोत्सुक लोगों को जीवन साथी प्राप्त होने के योग हैं। रुचिकर भोजन प्राप्त होगा। आज का दिन आप के लिए शुभ फलदायी होगा। व्यावसायिक स्थल पर वातावरण अनुकूल रहेगा। काम में सफलता प्राप्त करने में आसानी होगी। आंखों में पीड़ा होने की संभावना है।

तुला
आर्थिक दृष्टिकोण से सावधानी बरतने का समय है। आज नकारात्मक मानसिकता के साथ व्यवहार न करें। शारीरिक और मानसिक रूप से आप अस्वस्थ रहेंगे। मन में दुख और असंतोष की भावना हो सकती है।

वृश्चिक
मित्रों और स्वजनों के साथ वैचारिक स्तर पर मनमुटाव हो सकता है। स्वभाव में उग्रता और क्रोध की भावना रहेगी। धार्मिक काम में धन का खर्च होगा। धन का आकस्मिक व्यय हो सकता है। विवाद या झगड़े से हर संभव दूर रहें।

धनु
नई परियोजना की शुरुआत के लिए आज दिन शुभ है। सरकार की ओर से लाभ मिलने संभावना है। छोटे प्रवास का आयोजन हो सकता है। दोस्तों, करीबियों या पड़ोसियों के साथ पुरानी अनबन की घटना में सकारात्मक परिणाम आएगा।

मकर
आप नए संपर्क बना सकेंगे। मित्रों के साथ मौज-मस्ती करने का समय है। प्रवास की भी संभावना है। जीवनसाथी के साथ संबंध अधिक मधुर बनेंगे। सहोदरों एवं बुजुर्गों से लाभ होगा। शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा।

कुंभ
आपके लिए आज का दिन शुभफलदायी होगा। विविध क्षेत्रों में मिलने वाले लाभ से आपकी प्रसन्नता में वृद्धि होगी। मित्रों के पीछे खर्च भी होगा और उनसे लाभ भी प्राप्त होगा। किसी प्रवास या पर्यटन स्थल पर जाने से दिन रोमांचक बन जाएगा।

मीन
पारिवारिक जीवन में खुशी रहेगी। सुखी वैवाहिक जीवन व्यतीत कर सकेंगे। सरकारी कामकाज की बाधाएं दूर होंगी। आपके काम सरलतापूर्वक संपन्न होंगे। तन-मन में आनंद की अनुभूति होगी। आपके भाग्य में निखार आ सकता है। आर्थिक हानि होगी। पानी से दूर रहें।

आज का इतिहास

27 मार्च की महत्त्वपूर्ण घटनाएँ

- इंग्लैंड के शासक चार्ल्स द्वितीय ने बांबे को 1668 में ईस्ट इंडिया कंपनी को सौंपा था।
- स्पेन और फ्रांस ने 1721 में मैड्रिड समझौते पर हस्ताक्षर किए गए थे।
- अमेरिकी कांग्रेस ने देश में नौसेना की स्थापना को 1794 में स्वीकृति दी।
- पहले स्टीम फायर इंजन का सफल परीक्षण सन 1841 में न्यूयार्क में किया गया।
- अब्राहम गेस्नर ने 1855 में केरोसिन(मिट्टी के तेल) का पेटेंट कराया।
- पहला अंतरराष्ट्रीय रग्बी मैच स्कॉटलैंड और इंग्लैंड के बीच 1871 में खेला गया।
- बोस्टन से न्यूयार्क के बीच 1884 में पहली बार फोन पर लंबी दूरी की बातचीत हुयी।
- इतालवी आविष्कारक जी मारकोनी द्वारा 1899 में फ्रांस और इंग्लैंड के बीच पहला अंतरराष्ट्रीय रेडियो प्रसारण किया गया।
- अमेरिका ने 1901 में फिलीपीन्स के विद्रोही नेता एमिलियो एग्विनाल्डो को अपने कब्जे में लिया।
- जापान ने 1933 में लीग ऑफ नेशंस से खुद को अलग कर लिया।
- यूरोपीय देश लिथुआनिया में 1944 में लगभग दो हजार यहूदियों की हत्या कर दी गयी।
- अमेरिकी सरकार ने 1956 में कम्युनिस्ट अखबार डेली वर्कर को जब्त कर लिया।
- सन 1961 में आज के दिन से पहला विश्व रंगमंच दिवस मनाने की शुरुआत हुई।
- टेनेरीफ़ में 1977 में दुनिया की सबसे भयानक विमान दुर्घटना हुई थी, जिसमें तकरीबन 600 लोग मारे गए थे।
- यूरोपियन फ़ाइटर एअरक्राफ़्ट यूरोफाइटर ने 1977 में पहली उड़ान भरी।
- ए.एफ़.एम.ए.चौधरी 1982 में बांग्लादेश के राष्ट्रपति नियुक्त किए गए थे।
- अंतरिक्ष में 1989 में अमेरिका के मिसाइल रोधी उपग्रह का परीक्षण विफल हुआ।
- पहला मैक्रो वायरस मेलिसा की 1999 में सूचना दी गई।
- रूस ने 2003 में घातक टोपोल आर एस-12 एम बैलिस्टिक मिसाइल का परीक्षण किया।
- यासीन मलिक ने 2006 में कश्मीर में जनमत संग्रह कराए जाने की मांग की।
- अंतरिक्ष यान एंडेवर 2008 में पृथ्वी पर सफलतापूर्वक सुरक्षित लौटा।

27 मार्च को जन्मे व्यक्ति

- जर्मनी के एक भौतिकशास्त्री एवं गणितज्ञ वेलहेलम रोंटगन का 1845 में जन्म हुआ।
- फ्रांसीसी लेखक स्टेफन वल का जन्म 1922 में हुआ।
- एक प्रसिद्ध मानव विज्ञानी और नारीवादी विद्वान लीला दुबे का जन्म 1923 में हुआ।
- भारतीय राजनीतिज्ञ बनवारी लाल जोशी का जन्म 1936 में हुआ।
- फ्रांसीसी कवियों के अनुवादक और पत्रकारिता के प्रोफ़ेसर हेमन्त जोशी का जन्म 1954 में हुआ।

27 मार्च को हुए निधन

- भारत में मुहम्मदन एंग्लो-ओरिएण्टल कॉलेज की और अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी की स्थापना करने वाले सर सैयद अहमद खान की 1898 में पुण्यतिथि।
- ग़दर पार्टी के प्रमुख नेता पंडित कांशीराम का 1915 का निधन।

विशेष आलेख

उत्तर प्रदेश में लोकसभा चुनावों के सात चरणों का चक्रव्यूह पार करना नहीं होगा आसान

अजय कुमार।

उत्तर प्रदेश की 80 लोकसभा सीटों को लेकर पूरे देश मे कौतुहल दिखाई दे रहा है। लोकसभा सीटों के हिसाब से सबसे बड़े राज्य यूपी में मुकाबला त्रिकोणीय होता नजर आ रहा है। त्रिकोणीय मुकाबले में एक तरफ एनडीए के तले मोदी की 'सेना' जीत की हुंकार भर रही है तो दूसरी ओर राहुल गांधी के अगुवाई में 'इंडी' गठबंधन ताल ठोक रहा है। दोनों गठबंधनों में बस फर्क इतना है कि जहां एनडीए की ओर से मोदी पुन: प्रधानमंत्री पद के दावेदार हैं, वहीं इंडी गठबंधन ने कौन होगा पीएम पर पत्ते नहीं खोले हैं, लेकिन लगता यही है कि यदि इंडी गठबंधन के लिये सत्ता की राह बनी तो राहुल गांधी प्रधानमंत्री पद के सबसे बड़े दावेदार होंगे। खैर, अभी किसी निष्कर्ष पर पहुंचना सही नहीं है। कौन होगा अगल प्रधानमंत्री ? यह सात चरणों के मतदान के बाद 04 जून को पता चलेगा, जब वोटों की काउंटिंग होगी। इसी लिये फिलहाल तो सात चरणों के चक्रव्यूह को भेदने के लिये ही सभी पार्टियो मैदान में ताल ठोंक रही हैं। 19 और 26 अप्रैल को प्रथम चरण एवं द्वितीय चरण का मतदान होगा। इन दोनों चरणो में पश्चिमी यूपी की 16 सीटों पर वोटिंग होगी। प्रथम चरण और दूसरे चरण के मतदान में पश्चिमी उत्तर प्रदेश की क्रमश: आठ-आठ सीटों के उम्मीदवारों के भाग्य का फैसला होगा। 07 मई को भी तीसरे चरण में दस सीटों पर मतदान होगा इसमें भी दस में से पश्चिमी यूपी की चार सीटें शामिल होंगी। इसके बाद 13 मई को चौथे, 20 मई को पांचवें, 25 मई को छठे और 01 जून को सातवें चरण का मतदान होना होगा। शुरू के तीन चरणों में जो राजनैतिक जंग पश्चिमी यूपी से शुरू होगी वह चौथे और पांचवे चरण में रूहेलखंड, अवध की सीटों पर तो छठे और सातवें चरण में पूर्वांचल में पहुंच कर समाप्त हो जायेगी। चार जून को नतीजे आयेंगे। 2024 लोकसभा चुनावों की शुरुआत पश्चिमी यूपी की आठ लोकसभा सीटों पर से होगा। पहले चरण में चुनाव के लिए आठ सीटों में से, भाजपा ने 2014 के चुनावों में सभी सीटें जीती थीं। 2014 में पार्टी ने अकेले प्रदेश भर में 71 सीटें जीतीं थीं। जबकि एनडीए गठबंधन के पास कुल 73 सीटें थीं। 2019 के चुनाव में इन सीटों पर सपा-रालोद और बसपा गठबंधन के खिलाफ लड़ाई में बीजेपी का प्रदर्शन खराब रहा। उन्होंने 8 में से केवल तीन सीटें जीतीं। ऐसे में सपा और बसपा को पूर्वांचल में कई सीटें मिलीं, जबकि बीजेपी को पूरे प्रदेश में सिर्फ 62 सीटें मिलीं थीं। 2024 का चुनाव संग्राम भी फिर पश्चिम यूपी से शुरू होगा। शुरुआत में पश्चिमी यूपी की 8 लोकसभा सीटों पर चुनाव होंगे। पिछले लोकसभा चुनाव के बाद से यहां के राजनीतिक हालात में काफी बदलाव आया है, जिसका असर चुनाव में दिख रहा है। यह चुनाव क्षेत्र में एक प्रमुख व्यक्ति रालोद नेता जयंत चौधरी की स्थिति भी तय करेगा। केंद्रीय मंत्री संजय बालियान की हैट्रिक कोशिशों की परीक्षा होगी। यह चुनाव तय करेगा कि बीजेपी नेता वरुण गांधी का राजनीतिक भविष्य क्या होगा। यह चुनाव यह भी तय करेगा कि नखतौर विधायक ओम कुमार संसद में जा सकेंगे या नहीं। यह क्षेत्र किसान और जाट नेता अजीत सिंह के प्रभाव वाला माना जाता है। चाहे आप जीतें या हारें, जीतने वाला पक्ष हमेशा सोचता है कि उसका पलड़ा भारी है। अजीत को अपनी बदनामी की भारी राजनीतिक कीमत भी चुकानी पड़ी। यह चुनाव अजीत सिंह के बिना होगा। सत्ता पक्ष और विपक्ष दोनों की ओर से जयंत चौधरी को अजीत का उत्तराधिकारी बनाने की कोशिशें अंत तक जारी रहीं। आख़िरकार पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह को भारत रत्न देने की सत्ताधारी पार्टी की चाल सफल रही। पिछले चुनाव में जयंत जाट दलित मुस्लिम गठबंधन छोड़कर भारतीय जनता पार्टी में शामिल हो गए थे। यह चुनाव तय करेगा कि जयंत का फैसला कितना सही है। 2019 का लोकसभा चुनाव में जो सपा,बसपा और रालोद एक गठबंधन का हिस्सा थे,वह बिखर चुके हैं। बसपा अकेली चुनाव लड़ रही है तो रालोद ने बीजेपी का दामन थाम लिया है। इस बार पहले चरण की आठ सीटों में से चार पर सपा, तीन पर बसपा और एक पर रालोद को संघर्ष करना पड़ा। बसपा ने अपने हिस्से की तीनों सीटें (सहारनपुर, बिजनौर और नगीना) जीत लीं। सपा ने चार में से दो सीटें (मुरादाबाद और रामपुर) जीतीं। आरएलडी का खाता नहीं खुल सका। बीजेपी ने कैराना, मुजफ्फरनगर और पीलीभीत में सीटें जीती थीं।

बात आजम की चर्चा के बिना पूरी नहीं हो सकती है। प्रथम चरण में ही रामपुर की संसदीय सीट के लिये मुकाबला होना है। 2019 और उसके पहले के चुनाव में कभी समाजवादी पार्टी का मुस्लिम चेहरा माने जाने वाले आजम खान की रामपुर समेत कई सीटों पर जीत तय रहती थी।

केजरीवाल की गिरफ्तारी असाधारण घटना

दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी एक ऐसी बड़ी घटना है, जिसकी तुलना किसी भी पूर्व गिरफ्तारी से नहीं हो सकती। झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन इसके पूर्व 2 फरवरी को गिरफ्तार हुए थे और त्यागपत्र देने के बाद उनकी गिरफ्तारी दिखाई गई। वस्तुत: केजरीवाल का मामला इस रूप में गुणात्मक रूप से भिन्न है क्योंकि वह भ्रष्टाचार के विरुद्ध अभियानों, आंदोलन की अगुवाई करते हुए यहां तक पहुंचे। उनके बैनर का नाम ही था इंडिया अगेंस्ट क्रप्शन और उन्होंने यू.पी.ए. सरकार के दौरान प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह से लेकर अध्यक्ष सोनिया गांधी, उनके दामाद रॉबर्ट वाड्रा, कई केंद्रीय मंत्रियों जिनमें प्रणब मुखर्जी से लेकर कपिल सिब्बल, पी.चिदंबरम आदि शामिल थे, सबको भ्रष्टाचारी बताते हुए उनका त्यागपत्र देने एवं गिरफ्तार किए जाने की मांग की थी। आम लोगों में छवि यह बनी थी कि भ्रष्टाचार के विरुद्ध एक हीरो अन्ना हजारे के संरक्षण में उभरा है और उसके पास एक टीम है जिसमें लडने् और व्यवस्था बदलने का माद्दा है। हालांकि लंबे समय तक उनकी घोषणा यही रही कि वह राजनीति में नहीं जाएंगे कोई दल नहीं बनाएंगे। राजधानी दिल्ली में उनकी पूरी लड़ाई ही तत्कालीन मुख्यमंत्री शीला दीक्षित और उनकी सरकार पर भ्रष्टाचार के आरोपों को लेकर थी। पूरी दिल्ली में उन्होंने धरना, प्रदर्शन, सभाएं कीं और जनता के बड़े समूह को अपने साथ जोड़ा, क्योंकि लोगों को कठिनाइयां थीं, और वह जो बात बोलते थे वह व्यावहारिक रूप से सबके जीवन में लागू हो रही थी। शीला दीक्षित, उनकी सरकार और कांग्रेस पार्टी के लिए तब केजरीवाल और उनके साथियों का जवाब देना मुश्किल होता था। भ्रष्टाचार के विरुद्ध उठकर खड़ा होने वाला नेता अगर ऐसे शर्मनाक भ्रष्टाचार के आरोप में गिरफ्तार होता है तो इससे बड़ी त्रासदी भारतीय एक्टिविज्म और राजनीति के लिए कुछ नहीं हो सकती। किसी का गिरफ्तार होना या उस पर आरोप लगा होना उसके दोषी होने का प्रमाण नहीं होता। न्यायालय ही उसके दोषी या निर्दोष होने का प्रमाण देता है। इसलिए देश भर के ऐसे लोग जो भ्रष्टाचार के अंत की कामना से किसी भी क्षेत्र में काम कर रहे हों उन सबके लिए यह अत्यंत दुखद स्थिति है। सबकी चाहत यही होगी कि केजरीवाल और उनके साथी भ्रष्टाचार के आरोपों से बरी हों। ऐसा नहीं हुआ तो भ्रष्टाचार के विरुद्ध किसी आंदोलन पर भारत के आम लोग लंबे समय तक विश्वास नहीं करेंगे। दिल्ली शराब घोटाले की कानूनी कार्रवाई अब तक जिस दिशा में आगे बढ़ी है और छानबीन के आधार पर जिस तरह की बातें सामने आई हैं।